1

अभिवादन

(1:1, 2)

''पवित्र'' लोगों के नाम लिखते हुए अभिवादन में पौलुस ने बड़े-बड़े शब्दों को शामिल किया और ''अनुग्रह'' और ''शांति'' की बड़ी-बड़ी आशिषों का उल्लेख किया।

विश्वासी पवित्र लोगों के नाम पत्र (1:1)

[1]पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है, उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस में हैं।

पहली सदी के रोमी संसार में पत्र लिखे जाने के ढंग का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने अपनी पत्री का आरम्भ लेखक के नाम के साथ किया, जिनके नाम पत्र लिखा गया था उनका नाम, और फिर अभिवादन जोड़ा।[1] पौलुस के आरम्भ करने का असामान्य ढंग यह था कि वह दूसरों का नाम सहप्रेषकों के रूप में देता था। रोमियों की पत्री को छोड़, दूसरे पत्र अभिवादनों में दूसरों का नाम लिखने का पौलुस का प्रामाणिक ढंग माने जाते थे। इफिसियों में उसने प्रेषक के रूप में केवल अपना नाम दिया।

आयत 1. पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है। इन शब्दों से संकेत मिलता है कि यह पत्र इफिसुस के नाम एक आधिकारिक सम्प्रेषण था। ''प्रेरित'' शब्द ''अपने से उच्च अधिकारी की ओर से ठहराया और भेजा गया'' का संकेत देता है।[2] इसलिए पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि उसे मसीह का प्रतिनिधि ठहराया गया था। कुरिन्थियों ने पौलुस के प्रेरित होने पर सवाल खड़ा किया था, इस कारण कुरिन्थियों के नाम दोनों पत्रों में उसने प्रेरित के रूप में अपनी योग्यताएं दिखाईं। उसका जी उठने का गवाह होना (1 कुरिन्थियों 15:8; 9:1; देखें प्रेरितों 1:22), कुरिन्थुस की कलीसिया का अस्तित्व में होना (1 कुरिन्थियों 9:2) और उसके द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म (2 कुरिन्थियों 12:12) इस तथ्य के गवाह थे कि वह सचमुच में एक प्रेरित था। पौलुस की नियुक्ति और अधिकार उसके अपनी ओर से नहीं था बल्कि परमेश्वर की ओर से था, जिसने उसे प्रेरित होने के लिए चुना था।

आयत 1. पत्र **विश्वासी लोगों के नाम** है **जो इफिसुस में हैं**। (इस पुस्तक में पहले ''परिचय'' पाठ को देखें।) इस पत्र का अर्थ है कि उसके पाठक ''परमेश्वर द्वारा अपने लिए अलग किए हुए पवित्र लोगों में से थे।''[3] आयत 4 संकेत देती है कि पौलुस ने उनकी पवित्रता को परमेश्वर द्वारा उसे मसीह में चुने जाने के कारण के रूप में देखा। 5:26, 27 में पवित्रता को कलीसिया के लिए मसीह की मृत्यु के परिणाम के रूप में दिखाया गया है।

आयत 1. जिन मसीही लोगों के नाम उसने लिखा उन्हें **विश्वासी** लोगों के रूप में दिखाया

गया है। ''विश्वासी'' (*pistos* से) उन लोगों की बात बताता है जिन्होंने आज्ञाकारी विश्वास से सुसमाचार को ग्रहण किया था, न कि केवल उनकी जो भरोसेयोग्य या विश्वसनीय थे। गलातियों 6:10 में पौलुस ने अविश्वासियों के विपरीत उसी शब्द का इस्तेमाल किया। 1 तीमुथियुस 4:10, 12; 5:16; 6:2 और तीतुस 1:1, 6 में विश्वासियों के लिए भी इस शब्द का इस्तेमाल किया गया है। पौलुस ने उनसे बात की जो परमेश्वर के पवित्र लोग होने के लिए अनुग्रहपूर्वक चुने गए थे और जिन्होंने परमेश्वर की बुलाहट का जवाब विश्वासी ढंग से दिया था।

अन्त में इफिसुस के भाइयों को **मसीह यीशु में** होने की बात कही गई। ''में'' किसी दायरे या तत्व का संकेत देता है, जिसमें पवित्र लोग और विश्वासी लोग रहते हैं। ''मसीह यीशु में'' वाक्यांश ''अभिषिक्त'' के रूप में[4] और नाम से उद्धारकर्त्ता की बात करता है। (''मसीह'' उसका पद है और ''यीशु'' उसके व्यक्तित्व की पहचान है।) यह पदनाम पौलुस के लेखों में 164 बार मिलता है।[5] या तो यही वाक्यांश या इससे मिलता-जुलता इफिसियों की पुस्तक में 23 बार मिलता है, दस बार 1:2-14 में है।

इनसे पत्र के प्राप्तकर्त्ता मसीह यीशु ''एक साथ प्रबन्ध में''[6] सुसमाचार की बात मानकर उन्हांने बपतिस्मे के द्वारा मसीह में प्रवेश किया था (देखें रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)। मसीह के साथ इस नये सम्बन्ध में उन्हें परमेश्वर के पवित्र लोग और विश्वासी लोग बना दिया था।

''अनुग्रह'' और ''शान्ति'' (1:2)

[2]हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

आयत 2. वही शब्द यूनानी धर्मशास्त्र में पौलुस की अन्य पांच पत्रियों में मिलते हैं,[7] और सात अन्य पत्रों में कुछ बदलाव के साथ मिलते हैं।[8] पौलुस ने **परमेश्वर** और **यीशु मसीह** को **अनुग्रह** (*charis*) और **शांति** (*eirēnē*) के देने वाले बताया और अपने पाठकों के लिए प्रार्थना की कि उन्हें यह ''अनुभव'' मिल सके ''... कृपा जिसके योग्य वह हों और गहरा कल्याण जो मसीह और परमेश्वर की ओर से मिलता है जिसे मसीह के द्वारा पिता के रूप में जाना जाता है।''[9]

पत्र के अन्त के निकट ''अनुग्रह''[6] और ''शांति'' को फिर से मिलाया जाता है (6:23, 24) और पूरे पत्र में अलग-अलग दिखाया जाता है। पौलुस ने इस अभिवादन में ''यीशु मसीह'' के साथ **प्रभु** पद को जोड़ दिया, जिसका अर्थ यह है कि यीशु के पास अधिकार है और वह अपने लोगों का पूरी तरह से मालिक है।[10]

टिप्पणियां

[1]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 4. [2]आर. सी. एच. लैंसकी, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ सेंट पॉल'स एपिस्टल्ज़ टू द गलेशियंस, टू द इफिसियंस एंड टू द फिलिपियंस* (कोलंबस, ओहायो: वार्टबर्ग प्रैस, 1946; रिप्रिंट, मिनियापुलिस: आग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1961), 344. [3]लिंकोन, 5. [4]स्पायरस जोडिएट्स, संपा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी:

एएमजी पब्लिशर्स, 1992), 968. [5]लैंसकी, 346. [6]वही। [7]रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:3; 2 कुरिन्थियों 1:2; फिलिप्पियों 1:2; फिलेमोन 3. [8]गलातियों 1:3; कुलुस्सियों 1:2; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:2; 1 तीमुथियुस 1:2; 2 तीमुथियुस 1:2; तीतुस 1:4. [9]लिंकोन, 6. [10]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कॉन्कोर्डेन्स टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* (लंदन: सैमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 466.